Bed 1st year Paper-C2, Unit-2

* माध्यमिक शिक्षा और उनकी समस्याएँ *

माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है। अंग्रेजी में इसके लिए secondary शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है दूसरे स्तर के शिक्षा। प्रथम स्तर के अ शिक्षा के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा आती है।

भारतीय माध्यमिक शिक्षा का वर्तमान रूप उस ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था की देन है जिसकी आधार शिक्षा 1854 ई वुड की घोषणा पत्र के द्वारा रखा गया था। उस समय संपन्न वर्ग के कुछ चुने गए बालों के लिए माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था करने की बात कही गई थी। माध्यमिक शिक्षा की विस्तार के बारे में समय के साथ संकुचन तथा विस्तार हुए है। वर्तमान समय में भी माध्यमिक शिक्षा की विभिन्न अवधि राज्यों में भिन्न भिन्न है। माध्यमिक शिक्षा के केन्द्र माध्यमिक विद्यालय (हाई स्कूल, सेकेण्डरी हाई स्कूल और इन्टरमीडिएट कॉलेज है।) जो राज्य के शिक्षा विभाग का काम नियंत्रित होते है। माध्यमिक शिक्षा प्रचलनों द्वारा अनुसार 2 करोड़ छात्र जिसमें (1 करोड़ 30 लाख लड़के और 70 लाख लड़कियाँ) माध्यमिक स्कूलों की कक्षा 9 से 12 वर्ष तक के बच्चे पढ रहे है। देश की आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह प्रसार संतोषजनक माना जा सकता है।

परन्तु (10+2+3) शिक्षा संरचना की दबाव की दृष्टि से यह बहुत कम है। इसका प्रसार और बहुत करना है। इस समय हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा की क्षेत्र की जो मुख्य समस्याएँ है वे निम्नलिखित है :

समस्याएँ :

माध्यमिक शिक्षा की समस्याएँ निम्नलिखित है।

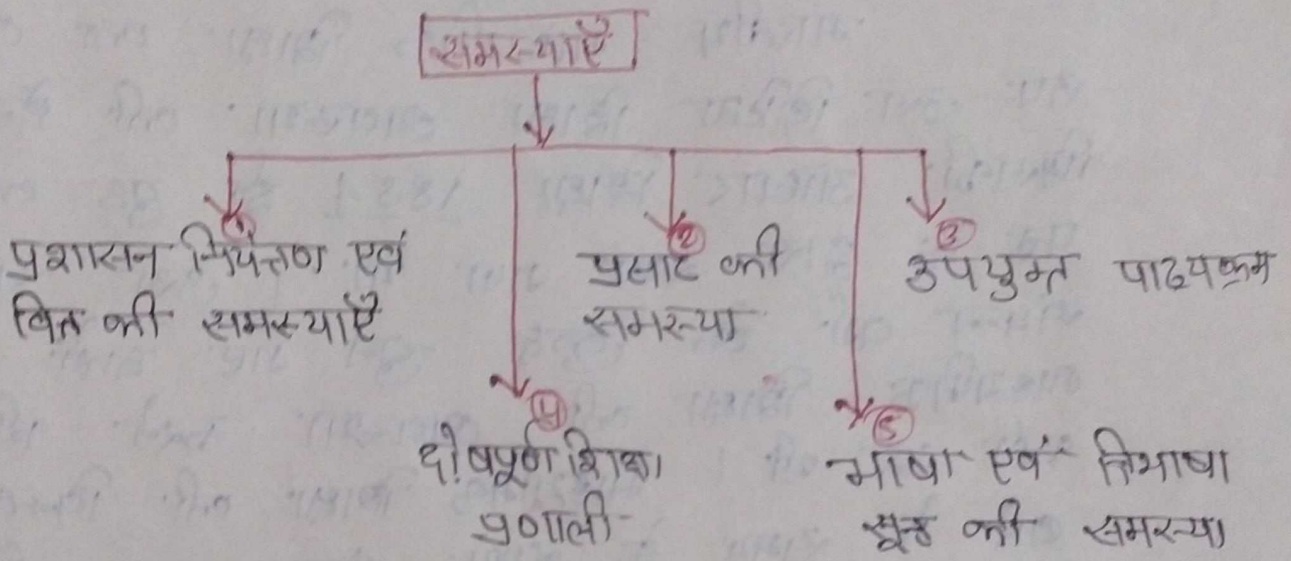

1)

स्कूलों में, संख्या में वृद्धि का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक उस आयु के बच्चे उसका लाभ नहीं उठाते अर्थात वे विद्यालय में प्रवेश नहीं लेते प्रवेश लेने के बाद इसमें रुके रहने के साथ इसे पूरा नहीं करते जो माध्यमिक शिक्षा के लिए एक बड़ी समस्या है।

भारत विभिन्न भाषाओं का देश है यहाँ एक प्रचलित कहावत है "कोष-कोष पर पानी बदले दस कोष पर वाणी" जब देश स्वतंत्र हुआ तो हमारे सामने भाषा संबंधित निम्न तीन समस्याएँ उपस्थित हुई :-

1) राष्ट्रभाषा किसको बनाया जाए ?
2) संघीय भाषा किस भाषा को बनाया जाए?
3) शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षा का माध्यम क्या है ?

सन् 1956 में केन्द्रिय शिक्षा सलाहकारों (CABE: central Advisory board of Education) ने इस समस्या पर गम्भीरता से विचार किया और इस समस्या के समाधान के लिए त्रिभाषा सूत्र प्रस्तुत किया। सन् 1957 में भारतीय सरकार ने इस समस्या को इस सत्र में अनेक बाधाएँ थीं। अतः 1961 में एक मुख्य सम्मेलन बुलाया गया और इस त्रिभाषा सूत्र को अंतिम रूप प्रदान किया गया जो इस प्रकार था।

माध्यमिक स्तर पर सभी छात्र छात्राओं को तीन भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य होगा।

i) मातृभाषा (प्रादेशिक भाषा)
ii) राष्ट्रभाषा हिन्दी (अहिन्दी क्षेत्रों में कोई अन्य स्वीकृत भारतीय भाषा)
iii) अंग्रेजी अथवा कोई अन्य यूरोपिय भाषा।

इस त्रिभाषा सूत्र के पीछे तीन मुख्य उद्देश्य थे :

(i) प्रांतिय भाषाओं का विकास करना
(ii) राष्ट्रभाषा हिन्दी को संपर्क भाषा बनाना।
(iii) राष्ट्रीय एकता एवं अंतरराष्ट्रीय सौहार्द्र स्थापित करना।